मसीह–निर्देशित मिशन

मत्ती 28:16–20

यदि आपके पास बाइबल है और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ मत्ती 28 निकालें। इससे पहले कि आज हम परमेश्वर के वचन में जाएँ, इस अध्ययन की शुरूआत में मैं आपको एक तस्वीर देना चाहता हूँ कि एक ऐसी कलीसिया का हिस्सा होने का क्या अर्थ है, जिसे रोका न जा सके।

मुझे याद है, हाल ही में, मैं टेनेसी में कैम्प सम्मेलन कर रहा था और सप्ताह के दौरान हम ओकोई नदी में नौकायन कर रहे थे।

इसमें आपके पास एक रबड़ की नौका होती है, जिसमें छह लोगों के लिए बैठने का स्थान होता है, दो आगे, दो बीच में, और दो पीछे। और फिर, एक और व्यक्ति सबसे पीछे बैठता है। वह मार्गदर्शक होता है, वह यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति उस अनुभव को जीए और इसलिए आप मार्गदर्शक को पसन्द करते हैं। उसका वहाँ रहना अच्छा है।

हम ओकोई नदी में जा रहे थे और उस दिन नदी वास्तव में उफान पर थी और हमें पता था कि पानी वास्तव में कठिन होगा, और इसलिए मैंने निर्णय लिया कि मेरे लिए सबसे अच्छा स्थान सबसे पीछे मार्गदर्शक के साथ था। और इसलिए, मैं जाकर वहाँ सबसे पीछे बैठ गया, और यदि मैं गिरता हूँ तो वह मुझे आसानी से बचा लेगा।

हेदर और मेरे साथ उस सम्मेलन से चार लोग नौका में बैठे और हमने नदी में नौकायन शुरू किया। यदि आपने कभी यह किया है तो आपको पता होगा कि यह कैसा होता है। जो लोग सामने बैठे होते हैं, वास्तव

में वे सारा कार्य करते हैं। वे ही सबसे पहले पतवार चलाते हैं, पानी सीधे उनके चेहरे तक आता है और यदि आप पीछे बैठे हैं, तो आप एक तरह से उनके साथ तैर रहे हैं। यह एक अच्छी, आनन्ददायक यात्रा होती है, सामने बैठे लोगों के समान इतनी खतरनाक नहीं होती है।

हम नदी के किनारे की ओर आते हैं और हमारा मार्गदर्शक कहता है, ठीक है, दोस्तो, आज हम ओकोई पर हमारी अन्तिम लहर की ओर आ रहे हैं, और यह सबसे अधिक खतरनाक है। और उसने कहा, "मुझे ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो अपनी इच्छा से बैल पर सवार होना चाहता हो।"

अब, आप में से कुछ लोगों को इसकी जानकारी होगी। मैं ने बैल पर सवार होने की बात पहले कभी नहीं सुनी थी, और मैं ने सोचा कि सम्मेलन आए हुए इन लोगों में से कोई मूर्ख व्यक्ति जाएगा और बैल पर सवार होगा और मैं आराम से बैठकर देखूँगा। और, मैं ऐसा ही करने की योजना बना रहा था, लेकिन तभी वे सब मेरी ओर ईशारा करने लगे और कहने लगे, "डेविड बैल पर सवार होंगे। डेविड को बैल पर सवार होना अच्छा लगेगा।" और मैं सोच रहा था कि यह सब क्या है। यह एक तरह से सम्मेलन के वक्ता को मारने का षड्यंत्र था। और उन्होंने कहा, ठीक है, डेविड, तुम जाओगे।

और मार्गदर्शक मेरे सामने आता है और कहता है, "ठीक है, तुम यह करोगे।" वह कहता है, "तुम नाव में सबसे आगे जाकर बैठो।" मैं ने कहा, "ठीक है, मैं सबसे आगे वाली जगहों में से एक पर बैठ सकता हूँ।" उसने कहा, "नहीं, नहीं। तुम्हें बिल्कुल किनारे पर, नाव के अगले सिरे पर बैठना है। तुम्हें अपने पैर नाव में सामने की ओर नीचे लटकाकर रखने हैं। और वहाँ नाव में नीचे एक छल्ला है, जो एक बहुत ही छोटा छल्ला है, तुम्हें उस छल्ले को पकड़ना है। तुम उस छल्ले को पकड़ोगे। हम लहरों पर तेजी से आगे बढ़ेंगे और तुम उस छल्ले को पकड़े हुए यह आशा करोगे कि कहीं गिर न जाओ।"

हर कोई कह रहा है, हाँ, और मैं सोच रहा हूँ, बिल्कुल नहीं। और वे कहते हैं, नहीं, इसे करो, इसे करो। केवल हेदर को छोड़कर, जैसे कि हेदर कह रही हो, मरो मत। और मैं रेंगते हुए नाव में आगे की ओर जाता हूँ। मैं वहाँ पहुँचता हूँ। सिरे पर बैठता हूँ। मैं अपने पैरों को सामने की ओर लटकाता हूँ और पूरी ताकत से उस छल्ले को पकड़ लेता हूँ। हम धारा में आगे बढ़ने लगते हैं। और लहरें सबसे पहले मेरे चेहरे पर लगती हैं। वे सीधे मुझ से आकर टकराती हैं। मैं नाव के सिरे पर बैठकर वह सब ले रहा हूँ जो धाराओं के पास देने के लिए है और धीरे–धीरे यह कठिन होने लगता है और हर कोई मेरा उत्साह बढ़ा रहा है, और मेरे अन्दर जोश बढ़ने लगता है और मैं सोचने लगता हूँ, मैं पहले कभी बैल पर सवार नहीं

हुआ हूँ, परन्तु बैलों पर सवार होने वालों को मैं ने टीवी पर देखा है। और बैलों पर सवार होने के बारे में मैं इतना जानता हूँ कि बैलों पर सवार होने वाले लोग दोनों हाथों से नहीं पकड़ते हैं, उनका एक हाथ खाली रहता है। अतः, मैं ने सोचा, ठीक है, यदि मुझे बैल से छुटकारा पाना है तो मुझे बैल पर सवार होना पड़ेगा। मेरा आत्मविश्वास कुछ ज्यादा ही बढ़ जाता है और मैं एक हाथ को छल्ले से हटा लेता हूँ। और मैं बैल की सवारी करने लगता हूँ।

उसी समय बैल निर्णय लेता है कि बहुत हो चुका है। वह मुझे अपने ऊपर से उतार देता है। अब मुझे लग रहा है कि मैं बैल के नीचे फँसा हूँ। और नाव अक्षरशः मेरे ऊपर है। हम धाराओं पर बढ़ रहे हैं। लहरे मुझसे से टकरा रही हैं। वे आकर मुझे जकड़ना चाहती हैं। हेदर मानो कह रही हो, अभी मत मरना। वे मुझे अन्दर खींचने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन खींच नहीं पा रहे हैं। मैं शेष समय पानी के नीचे रहकर धाराओं में बहता हूँ, नाव के नीचे अपने प्रिय जीवन को पकड़े रहता हूँ।

अन्ततः, हम धारा से बाहर आते हैं और वे मुझे नाव में खींच लेते हैं। उन्हें पता नहीं कि मैं जिन्दा हूँ या नहीं। उन्हें पता नहीं कि मेरी साँस चल रही है या नहीं। मेरे नाक, आँखों और मुँह से पानी बह रहा है। मेरा मतलब है, हर कहीं से पानी निकल रहा है। वे मेरी ओर देखते हैं, मानो पूछ रहे हों, क्या तुम ठीक हो? क्या तुम ठीक हो? अन्ततः, मैं ने साँस ली। मैं ने ऊपर की ओर देखा और पूछा, "यह अद्भुत था।" हाँ, यह अद्भुत था। यह नाव में पीछे बैठकर यात्रा करने से बहुत अलग था। मैं ने अक्षरशः वह सब अनुभव किया जो नदी के पास देने के लिए था।

जब हम पवित्रशास्त्र में डुबकी लगाते हैं, तो मैं आपको निमंत्रण देना चाहता हूँ कि आप मेरे साथ नाव में आगे बैठें। इससे मेरा मतलब यह है, मेरे विचार से हम में से अधिकाँश लोग, हम सब नाव में हैं। हम में से बहुसंख्यक लोगों ने मसीह पर विश्वास किया है, जिसने हमारे पापों को क्षमा कर दिया है। हमने उस पर भरोसा किया है और हम कलीसिया में सक्रिय हैं। हम सब नाव में हैं। कुछ सप्ताह पहले हमने भजन 67 को देखा था; उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक हमने देखा था कि कैसे हमें सारी जातियों में परमेश्वर की महिमा को फैलाने के लिए रचा गया है।

और मैं आपको आमंत्रित करना चाहता हूँ कि आप पीछे की जगह से नाव में आगे की ओर आएँ। और अगले छह प्रचारों में मैं आपको उस जगह की ओर बुलाना चाहता हूँ जो मेरे विचार से कलीसिया का मिशन है। मैं आप को उन सारी बातों का स्वाद लेने और अनुभव करने का निमंत्रण देना चाहता हूँ जो इस

नदी के पास देने के लिए है और मैं आप को बताना चाहता हूँ नाव में आगे की ओर जोखिम थोड़ा ज्यादा है और यह थोड़ा अधिक खतरनाक है। परन्तु, मैं चाहता हूँ आप आरम्भ से ही इस बात को जानें कि यह इसके योग्य है।

हम मत्ती 28वें अध्याय से पवित्रशास्त्र के एक परिच्छेद को देखने जा रहे हैं, एक ऐसा परिच्छेद जिसे मेरे विचार से, आप में बहुत से लोग जानते हैं। यह पवित्रशास्त्र के उन परिच्छेदों में से एक है जो कलीसिया में अत्यधिक विख्यात है, लेकिन मेरे विचार से, उसका पालन बहुत कम होता है। मैं चाहता हूँ कि हम उस वचन में उतरें और प्रार्थना करें कि जब हम चेलों से विदा होते समय कहे गए यीशु के वचनों को देखते हैं, तो परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा हमें ताजा दृष्टि प्रदान करे।

मत्ती 28:16. बाइबल कहती है, *"और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था।"* (मत्ती 28:16) अब, केवल एक टिप्पणी के रूप में, जब भी आप यीशु को पहाड़ की ओर जाते देखते हैं, तो आप जानते हैं कि कोई महत्वपूर्ण बात है। यह एक महत्वपूर्ण सन्देश है, मत्ती 5–7, पहाड़ी उपदेश। फिर मत्ती 17 में, पहाड़ पर रूपान्तरण होता है। हम देखते हैं यह पृथ्वी पर यीशु के जीवन का अन्तिम समय है, और वह कहता है, "मैं तुम्हें पहाड़ पर ले जाऊँगा।"

महत्वपूर्ण सन्देश, लिखा है, *"और उन्हों ने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी–किसी को सन्देह हुआ। यीशु ने उन के पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।"* (मत्ती 28:17–20)

मैं इस परिच्छेद को तीन अलग–अलग भागों में विभाजित करना चाहता हूँ। और मैं चाहता हूँ कि हम मसीह की सामर्थ को और मसीह की योजना को और फिर मसीह की उपस्थिति को देखें।

मसीह की सामर्थ

आइए हम पहले बिन्दू से शुरू करते हैं, मसीह की सामर्थ। महान आज्ञा में यही वह भाग है जिसे हम अक्सर देखते हैं। *"जाओ, और सारी जातियों के लोगों को चेला बनाओ।"* (मत्ती 28:19) हमें यह अहसास होना चाहिए कि यहाँ यीशु कुछ कह रहे हैं वह सब इस तथ्य पर टिका है कि यीशु के पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार है। यह उसे दिया गया है।

अब, जब यीशु कहते हैं कि उनके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार है तो ऐसा क्या है जो उसके अधिकार के अधीन नहीं है? सब कुछ उसके अधीन है। अधिकार उसके पास है। वह कहता है, "मैं सब कुछ के ऊपर प्रभु हूँ। मैं स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकारी हूँ।" वह क्रूस पर मरा, कब्र में से जी उठा, मृत्यु, पाप और अधोलोक को उसने जीत लिया, और इसीलिए वह सब कुछ के ऊपर प्रभु है।

यीशु हमारे जीवनों का प्रभु है।

मेरे विचार से इसके दो अर्थ हैं, पहला, वह हमारे जीवनों का प्रभु है। वह हम सबके जीवनों का प्रभु है।

मुझे यह आश्चर्यजनक लगता है जब लोग मेरे पास आकर कहते हैं, "डेव, मैंने यीशु को मेरे जीवन का प्रभु बनाने का निर्णय लिया है।" इस कथन में क्या गलत है? आपके पास इस विषय में कोई विकल्प ही नहीं था। यीशु हम में से हर एक के जीवनों का प्रभु है, बाइबल क्या कहती है? एक दिन पिता परमेश्वर की महिमा के लिए स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर एक घुटना टिकेगा और हर एक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह प्रभु है। हम में से हर एक व्यक्ति एक दिन अपने घुटने टेकेगा और यीशु को प्रभु कहेगा। सवाल यह है, क्या हम इसे अभी करेंगे या तब करेंगे जब बहुत देर हो चुकी होगी। सवाल यह नहीं है कि क्या वह हमारे जीवनों का प्रभु है। वह हम सबके जीवनों का प्रभु है। सवाल यह है कि क्या हमने अपने जीवनों में उसके प्रभुत्व को स्वीकार किया है?

अब, इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि हमने हमारे जीवनों की दिशा निर्धारित करने का हर एक अधिकार उसे दे दिया है। हमने हमारे जीवनों की दिशा निर्धारित करने के हर एक अधिकार को समर्पित कर दिया है। यदि वह प्रभु है और हमने पापों से क्षमा पाने के लिए उस विश्वास किया है, तो अब हमारे जीवनों में निर्णय हम नहीं लेते हैं।

और मैं आप से खुलकर बात करना चाहता हूँ। पुरूषो, अपने घरों में अब आप निर्णय नहीं लेते हैं। अब आप यह निर्धारित नहीं करते हैं कि आप अपने पेशे या अपनी महत्वाकांक्षाओं के साथ क्या करेंगे। अब

आपकी इच्छा का कोई मतलब नहीं है। मसीह निर्धारित करता है। आपने अपने जीवन की दिशा को निर्धारित करने का अधिकार उसे दे दिया है।

छात्रो, जब आप अपने भविष्य के बारे में सोचते हैं, आप किस विद्यालय में जाएँगे, आप क्या पढ़ाई करेंगे, आप अपने जीवन में क्या करेंगे। यह आप पर निर्भर नहीं है, यह मसीह पर निर्भर है। वही निर्णय लेता है। आप उसके अधीन हैं। हमने अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने का हर एक अधिकार उसे दे दिया है। आपने अपनी कलीसिया की दिशा निर्धारित करने का अधिकार उसे दे दिया है। यह आपके हाथों में नहीं है। यह उसके हाथों में है जिसे कलीसिया के ऊपर अधिकार है। वह हमारे जीवनों का प्रभु है। यह बहुत बड़ी बात है। जब हम अन्त की ओर आते हैं तो सारी बातें इसी ओर आती हैं, इसलिए इसे मन में रखें।

यीशु राष्ट्रों का प्रभु है।

मेरा विश्वास है कि इसका एक और मतलब यह है कि यीशु केवल हमारे जीवनों का ही प्रभु नहीं है, वह राष्ट्रों का प्रभु है। स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उसके पास है। और मैं चाहता हूँ आप देखें कि पवित्रशास्त्र में कैसे बहुत पहले पुराने नियम में ही इसकी भविष्यद्वाणी कर दी गई थी और इसकी पूर्णता को हम नये नियम के अन्त में देखते हैं। और यह एक प्रकार से मध्य बिन्दू है।

मत्ती 28 को खुला रखें और मेरे साथ पुराने नियम में दानिय्येल की पुस्तक को निकालें। मैं चाहता हूँ आप दानिय्येल में कुछ वचनों को रेखांकित करें जो मेरे विचार में इस बात को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार यीशु के पास होने का क्या मतलब है। दानिय्येल 7, हम जो पढ़ने जा रहे हैं उसे पुराना नियम भविष्यद्वाणी कहता है। यह शब्द भविष्य में होने वाली बात को बताता है। यह मसीह के परिदृश्य में आने और मत्ती 28:18 में यह कहने से सैंकड़ों वर्ष पूर्व कहा गया था कि, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।"

परन्तु मैं चाहता हूँ आप दानिय्येल की भविष्यद्वाणी को देखें। दानिय्येल 7, मेरे साथ पद 13 और 14 को देखें। सुनें दानिय्येल ने इस भविष्यद्वाणिक दर्शन में क्या देखा था। इसे रेखांकित करें और सोचें कि इसका मत्ती 28 से क्या संबंध है, जिसके बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं। बाइबल कहती है, पद 13, *"मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई,"* (दानिय्येल 7:13) आप "मनुष्य के सन्तान" को रेखांकित कर सकते हैं। इस शब्द का अर्थ हैः जो मानव है, लेकिन उसकी उत्पत्ति स्वर्गीय है। "मनुष्य के पुत्र" में मानवीय और दैवीय आयाम भी है, यही मसीह है। वह मानव है, परन्तु वह दैवीय भी है।

मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई... अब देखें, यह मसीह के बारे में बता रहा है, *"आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप लाए।"* और इसे देखें, *"तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"* (दानिय्येल 7:14) यह मसीह के बारे में बात कर रहा है। एक व्यक्ति आने वाला है। उसके पास सारा अधिकार, सामर्थ, और राज्य होगा। और सारी जातियाँ एवं सारे राष्ट्र प्रभु के रूप में उसकी आराधना करेंगे।

अब, यह मत्ती से सैंकड़ों वर्ष पूर्व दानिय्येल ने कहा है। अब, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ बाइबल के अन्त की ओर चलें। प्रकाशितवाक्य 7. मैं चाहता हूँ आप देखें कि दानिय्येल ने जो कहा था यहाँ प्रकाशितवाक्य 7 में पूरा होता है। यह उस तस्वीर के बारे में बता रहा है, जिसकी ओर सारी अनन्तता बढ़ रही है। और इसे समझें क्योंकि मत्ती 28 को समझने के लिए यह महत्वपूर्ण है। प्रकाशितवाक्य 7 को देखें, बाइबल की अन्तिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य 7. मेरे साथ पद 9 से पढ़ें। यहाँ यूहन्न बता रहा है कि वह सारी अनन्तता को किस ओर जाते हुए देख रहा है। पद 9 में वह कहता है, *"इस के बाद, मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था,"* (प्रकाशितवाक्य 7:9) यह सुनने में दानिय्येल 7 जैसा लगता है।

> *...श्वेत वस्त्र पहने, और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए सिंहासन के सामने और मेमने के सामने खड़ी है। और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने का जय–जयकार हो। और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के सामने मुँह के बल गिर पड़े; और परमेश्वर को दण्डवत् करके कहा, आमीन। हमारे परमेश्वर की स्तुति, ओर महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद, और आदर, और सामर्थ, और शक्ति युगानुयुग बनी रहे। आमीन।* (प्रका. 7:9–12)

सारी अनन्तता इसी तस्वीर की ओर बढ़ रही है, जब हर एक जाति और हर एक गोत्र और हर एक भाषा के लोग मेमने के सिंहासन के सामने दण्डवत् करेंगे, जो वध हुआ था और जिसने अन्तिम युद्ध में जय पाई थी और वे उसकी स्तुति करेंगे क्योंकि वह प्रभु है। उसके पास सारा अधिकार, और सारी सृष्टि के ऊपर प्रभुत्व प्राप्त है।

अब, जब आप मत्ती 28 पर वापस आते हैं तो आप सोचने लगते हैं कि महान आज्ञा के लिए इसका क्या मतलब है। मेरा विचार है कि इसके दो मुख्य आशय हैं। पहला, मैं चाहता हूँ आप देखें कि इसी के कारण हम जाते हैं। इसीलिए हम सारी जातियों को चेला बनाने की कोशिश करते हैं, और इसीलिए इसे हमारे जीवन की प्राथमिकता होना चाहिए। एक पल में हम इस मिशन में उतरेंगे और देखेंगे कि इसका मतलब क्या है, परन्तु मैं चाहता हूँ कि आरम्भ में ही आप उस कारण को देखें कि हम क्यों जाते हैं।

आप में से कुछ लोग सोचेंगे, "मैं इस शहर में, अपने कार्यस्थल में या घर में या मेरे समुदाय में, मैं अपने जीवन में एक ही बात के पीछे क्यों लगा रहूँ? सारी जातियों को चेला बनाना, मैं इसे क्यों करूँ? और इसका एक ही कारण है, क्योंकि वह इस शहर में हम में से हर एक का प्रभु है। और वह उन सबकी आराधना के योग्य है।

इसीलिए हम अपने आप को इस मिशन में लगाते हैं, क्योंकि हमारे दिलों में हमें यह निश्चय है कि हमारे साथ कार्य करने वाले और हमारे घरों में रहने वाले लोगों को यह जानने की जरूरत है कि यीशु ही प्रभु है और यीशु ने उनके पापों की कीमत चुका दी है। वह क्रूस पर मरा और मुर्दों में से जी उठा है और वह उन सबकी आराधना के योग्य है। इसीलिए हम जाते हैं, न केवल हमारे शहर में, बल्कि दूसरे स्थानों पर भी।

लोग मुझ से पूछते हैं, यहाँ तक कि मसीही लोग भी, जो मेरे घनिष्ट हैं, मुझ से पूछते हैं, "डेव, तुम सूडान क्यों जा रहे हो?" क्या तुम्हें नहीं पता कि वह खतरनाक है? क्या तुम्हें नहीं पता कि ऐसे स्थान पर जाने में बहुत अधिक खतरा है? तुम कुछ सप्ताहों के लिए अपनी पत्नी को अकेली छोड़ देते हो, और वापस न लौटने का जोखिम उठाकर सूडान जाते हो? तुम ऐसा क्यों करते हो? तुम ऐसा करने के बारे में सोचते ही क्यों हो? तुम अपना सामान बाँधकर, चाहे थोड़े समय के लिए हो या अधिक समय के लिए, अफ्रीका में जाकर रहने या अफ्रीका की यात्रा करने के बारे में क्यों सोचते हो?

अफ्रीका जाने का कारण यह है। अफ्रीका में जाने का कारण यह है कि वहाँ 3,000 ऐसे कबीले हैं जो आत्माओं की उपासना करते हैं और पूरी तरह परमेश्वर से परमेश्वर से वंचित हैं और यीशु मसीह उनकी आराधना के योग्य है। वह जातियों का प्रभु है। आप जापान, लाओस या वियतनाम जैसी जगहों पर जाने के बारे में विचार क्यों करते हैं? क्योंकि, उन देशों में 35 करोड़ लोग हैं जिनकी आराधना के योग्य केवल यीशु मसीह है, न कि कोई और।

आप भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका जैसे स्थानों पर जाने के बारे में क्यों सोचते हैं? आप वहाँ क्यों जाते हैं? उसके बारे में आप सोचते ही क्यों हैं? क्योंकि वहाँ 95 करोड़ लोग हैं जो इतने अधिक देवी–देवताओं की उपासना करते हैं कि हम सोच भी नहीं सकते। और केवल एक ही परमेश्वर उन सबकी आराधना के योग्य है। उसका नाम है, यीशु।

आप चीन, उत्तरी कोरिया, या अन्य साम्यवादी देशों में क्यों जाते हैं? ऐसे स्थानों पर जाने का जोखिम उठाते हैं, क्योंकि उन देशों में एक अरब से भी अधिक लोग नास्तिक हैं और मानते हैं कि कोई परमेश्वर नहीं है, लेकिन एक परमेश्वर है और वह उन सारे लोगों की आराधना के योग्य है।

हमें मध्य–पूर्व में सुसमाचार को पहुँचाने की चिन्ता क्यों करनी चाहिए? कुछ भाइयों और बहनों और छात्रों के जीवन का सपना, मध्य–पूर्व में जाकर सुसमाचार का प्रचार करना क्यों है? हम उसके बारे में सोचते ही क्यों हैं? क्योंकि वहाँ एक अरब से अधिक लोग उपवास और दान–पुण्य और धार्मिक रीति–रिवाजों में लगे हुए हैं, और केवल यीशु ही उन सबकी आराधना के योग्य है।

इसीलिए हम जाते हैं। क्योंकि हमारे दिलों में, हम जानते हैं कि वह प्रभु है। वह जातियों का प्रभु है और हम उसके प्रभुत्व को फैलाना चाहते हैं। यही कारण है कि हम इस मिशन के लिए सब कुछ समर्पित कर देते हैं। केवल इतना ही नहीं, मैं केवल हमारे जाने के लक्ष्य को नहीं देखना चाहता, परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप उसके नीचे अगले सत्य को देखें, हम केवल इसी कारण नहीं जाते हैं, लेकिन मैं चाहता हूँ आप देखें कि इस मिशन की गारण्टी है।

दानिय्येल और मत्ती और फिर प्रकाशितवाक्य में हमने जो देखा है, उसकी खूबसूरती यह तथ्य है कि आप अपने आप को इस मिशन में लगा देते हैं। आप एक ऐसे मिशन के हिस्से हैं जिसे वास्तव में रोका नहीं जा सकता है। इस पर निशान लगाएँ, हर एक गोत्र, हर एक जाति मसीह के सिंहासन के सामने दण्डवत् करेगी और मसीह को प्रभु कहेगी। सवाल यह है, "क्या कलीसिया इस कार्य में शामिल होगी?" सवाल यह है, "क्या आप इस मिशन में शामिल होंगे?" यह निश्चित है। आप जानते हैं। आप शुरूआत से ही अन्त को जानते हैं। आप जानते हैं कि मसीह जीत गया है। वह विजयी है।

और यह उसे समझने के लिए महत्वपूर्ण है जिसे हम अभी देखने वाले हैं। हमें यह अहसास होने की जरूरत है कि परमेश्वर को विशेष रूप से आपकी या मेरी जरूरत नहीं है। और इसे पूरा करने के लिए उसे आपकी कलीसिया की जरूरत नहीं है। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ बने रहें। इससे चूक न जाएँ।

मुझे हाल ही की एक यात्रा याद है जब मैं एशिया में था और अलग–अलग स्थानों पर जा रहा था और पैदल यात्रा कर रहा था और ऐसे कुछ कठिन कार्य कर रहा था, जो विभिन्न तरीकों से मुझे परख रहे थे। और एक समय मुझे याद है जब मैं पहाड़ों में शान्ति से बैठा था और मैं सोचने लगा, "मैं वास्तव में यहाँ कुछ अच्छा कर रहा हूँ।" वह ऐसे पलों में से एक था जब मैं सोचने लगा, "परमेश्वर, परमेश्वर जरूर मुझे अपने साथ पाकर बहुत खुश होगा।" क्या आपने पहले कभी ऐसा सोचा है? शायद आप उतने शारीरिक नहीं हैं, जितना मैं हूँ, लेकिन मैं यह सोचने लगा।

उस समय परमेश्वर ने मुझ से कहा, "तू हो या न हो, मैं इस मिशन को पूरा करूँगा।" वह हमें इस मिशन में इसलिए शामिल नहीं करता है कि उसे हमारी जरूरत है। वह हमें इस मिशन में इसलिए शामिल करता है क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है और हमें इसका हिस्सा बनने के अनुभव को पाने का सौभाग्य मिला है। और इसलिए, मैं कलीसिया से कहना चाहता हूँ कि यह मिशन आप से छूट न जाए। और मैं हर एक परिवार से कहना चाहता हूँ कि यह मिशन आप से छूट न जाए। यह निश्चित है। मसीह की सामर्थ है।

मसीह की योजना

यह अगली बात के लिए आधार तैयार करता है, मसीह की योजना। अब, जब आप यहाँ मसीह की योजना पर आते हैं और पवित्रशास्त्र के इस परिच्छेद के बारे में सोचने लगते हैं, *"इसलिए,"* इसके प्रकाश में, *"तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।"* (मत्ती 28:19–20)

इस पूरे परिच्छेद में और नये नियम की मूल भाषा में, केवल एक ही आदेशात्मक क्रिया है। यदि आप व्याकरण में थोड़े कमजोर हैं, तो इसके महत्वपूर्ण होने का कारण यह है। एक आदेशात्मक क्रिया एक आज्ञासूचक क्रिया होती है। जब मेरी पत्नी मुझे कोई आदेश देती है तो वह एक आज्ञा है। मैं वहीं पर उसे

करता हूँ। कम से कम, मुझे उसे करना पड़ेगा। पवित्रशास्त्र के इस परिच्छेद में हम एक आदेश को देखते हैं। पूरा परिच्छेद इसी आदेश, आज्ञा पर केन्द्रित है।

अब, जब आप उन वचनों को देखते हैं, आप अपनी बाइबल को खोल सकते हैं। आदेशात्मक क्रिया कौनसी है? हमारा पहला विचार होता है कि यह 'जाओ' है। लेकिन नये नियम की मूल भाषा में ऐसा नहीं है। यह एक कृदन्त है जो यह बताने में सहायता करता है कि आदेश क्या है। इस परिच्छेद में एक आज्ञा है और वह है, सारी जातियों को चेला बनाओ। और अगले छह सन्देशों में हम इसी मिशन के बारे में बात करेंगे और यही वह मिशन है जिसके बारे में यीशु इस परिच्छेद में बात कर रहे हैं। हमारा एक ही मिशन है, सारी जातियों को चेला बनाओ।

यीशु चेलों से कहते हैं, और इसका आशय हम सबसे है जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया है। आपके जीवन में एक मिशन है, नहीं, यह धन कमाना नहीं है और सफल होना नहीं है और न ही आरामदायक परिवार का होना है। यह अच्छा जीवन बिताना नहीं है। यह अच्छी तरह सेवानिवृत्त होना नहीं है। अच्छी शिक्षा पाना भी नहीं है, ऐसा नहीं है कि ये सारी बातें अपने आप में बुरी हैं, लेकिन हमारे जीवनों का एक मिशन है। हम में से प्रत्येक के जीवन का– यदि हमने मसीह पर विश्वास किया है तो एक मिशन है जो बाकी सारी बातों से बढ़कर है और वह है, सारी जातियों को चेला बनाना। और यीशु हमें आज्ञा देते हैं कि हमारा जीवन इसी मिशन के इर्द–गिर्द घूमे।

अब, मैं जान–बूझकर आज्ञा शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, क्योंकि परिच्छेद में ऐसा ही है। और मैं चाहता हूँ आप देखें कि यह एक आह्वान नहीं, बल्कि एक आदेश है। कृपया मुझे सुनें। इससे चूक न जाएँ। सारी जातियों को चेला बनाने के बारे में मैं जो बात कर रहा हूँ, वह एक ऐसी बुलाहट नहीं है जो हम में से केवल कुछ चुनींदा लोगों के लिए आरक्षित है। हम मिशन्स को अक्सर इसी नजर से देखते हैं। इस व्यक्ति को दूसरी जातियों तक जाना है। या, यही वह व्यक्ति है जिसे बाहर जाना और अपने विश्वास को बाँटना और चेले बनाना चाहिए, यह उनका कार्य है। और, हम इसकी जिम्मेदारी कुछ चुनींदा लोगों पर डाल देते हैं, और कहते हैं, "उन्हें इस कार्य के लिए बुलाया गया है।" और मैं चाहता हूँ आप देखें कि यह पूरी तरह से बाइबल के विपरीत है। हमने बुलाहट के इस खतरनाक विचार को रचा है। और, बुलाहट के बारे में बाइबल की बात का गलत अर्थ निकाल लिया है।

मेरे विचार में, जब आप पवित्रशास्त्र को देखते हैं तो बाइबल स्पष्टता से बताती है कि परमेश्वर हमें उद्धार की बुलाहट देता है। वह हमें उस पर विश्वास करने का निमंत्रण देता है। अतः, उद्धार की बुलाहट। जब हम उस बुलाहट का प्रत्युत्तर देते हैं, तो हम में से प्रत्येक के जीवन के केन्द्र में एक आज्ञा है और वह सारी जातियों को चेला बनाना है।

अब, स्पष्टतः मैं इतना अज्ञानी नहीं हूँ कि मैं यह सोचने लगूँ कि यह आपके जीवन में भी वैसा ही होगा जैसा मेरे जीवन में है। मैं आप से भिन्न कार्य करूँगा। आप मुझ से अलग कार्य करेंगे। हमारे वरदान, दक्षताएँ और व्यक्तित्व अलग–अलग हैं। और इसलिए, इस आज्ञा से, हम सबके जीवनों में अलग–अलग बुलाहटें हैं। कुछ लोगों को सेवा के विभिन्न क्षेत्रों के लिए बुलाया गया है। कुछ लोगों को कलीसिया में कार्य करने के लिए बुलाया गया है। कुछ लोगों को विदेशों में जाने के लिए बुलाया गया है। कुछ लोगों को लेखांकन के लिए बुलाया गया है। कुछ लोगों को शिक्षक बनने के लिए बुलाया गया है। कुछ लोगों को घर पर रहने के लिए बुलाया गया है। हमारे जीवन में अलग–अलग बुलाहटें हैं, लेकिन वे सब इसी एक आज्ञा से आती हैं– सारी जातियों को चेला बनाओ।

मेरे विचार से हम इन दोनों को एक समझ बैठते हैं। हम परमेश्वर की बुलाहट को लेते हैं और उसे हमारी आज्ञा के संस्करण में रखते हैं और हम सोचते हैं कि सारी जातियों को चेले बनाने का कार्य हम में से केवल कुछ लोगों का है, लेकिन यह धर्मशास्त्रीय नहीं है। मैं चाहता हूँ आप इससे जूझें, आपके जीवन में, एक आदेश है, एक मिशन– सारी जातियों को चेला बनाना।

हम में से प्रत्येक, कोई अपवाद नहीं है। यदि हमने मसीह पर विश्वास किया है, तो यह आज्ञा हमें चलाती है। अब, हमारे वरदान अलग–अलग हैं। आप में से कुछ लोगों को लेखांकन पसन्द है। मुझे नहीं पता कि आपको लेखांकन क्यों पसन्द है, लेकिन आपको लेखांकन पसन्द है। और परमेश्वर ने आपको उस क्षेत्र में वरदान और दक्षताएँ और जोश दिया है, परन्तु मैं चाहता हूँ आप देखें कि जीवन में आपकी सम्पूर्ण आज्ञा एक लेखाकार बनने की नहीं है। आपकी आज्ञा सारी जातियों को चेला बनाने की है और परमेश्वर ने आपको वरदान दिए हैं कि लेखांकन के संसार में इसे करने में आपको सहायता मिल सके।

आप में से कुछ लोगों को शिक्षण, कानून, चिकित्सा, या जो भी हो, वास्तुकला, निर्माण, अभियांत्रिकी, आपकी पसन्द चाहे जो हो, और आपकी इच्छा चाहे जो हो, उन सबको परमेश्वर ने सारी जातियों को चेला बनाने

की इस आज्ञा को पूरा करने के लिए हमें दिया है। मुझे पता है आप क्या सोच रहे हैं, इसे आप कैसे करेंगे? आप सारी जातियों को चेला कैसे बनाते हैं?

मुझे खुशी है कि आपने यह सवाल पूछा। मैं चाहता हूँ कि हम इसी को देखें। मैं चाहता हूँ हम देखें कि ये कृदन्त, जाना, बपतिस्मा देना और सिखाना यह समझने में हमारी सहायता करते हैं कि सारी जातियों को चेला बनाने का क्या अर्थ है।

अतः, मेरा अनुमान है कि यदि यह आज्ञा हम सबके जीवनों का केन्द्र है, तो शायद हमारे लिए यह जानना अच्छा होगा कि सारी जातियों को चेला बनाने का क्या मतलब है। मेरा अनुमान है कि यदि मैं विभिन्न लोगों से पूछूँ कि, "सारी जातियों को चेला बनाने का क्या मतलब है?" तो शायद हम में से कुछ लोगों को पता होगा और शायद कुछ को पता नहीं होगा। हम में से कुछ लोग दुविधा में होंगे। मेरा मतलब है, मैं नहीं जानता। मैं चाहता हूँ हम देखें कि यदि हम कलीसिया में किसी भी कार्य में निपुण बनना चाहते हैं, तो हमें सारी जातियों को चेला बनाने के कार्य में निपुण बनने की जरूरत है। हमें यह समझना है कि इसे कैसे किया जाता है, क्योंकि स्वर्ग में जाने से ठीक पहले यीशु ने हमें यही करने के लिए कहा था।

जाना

तो, आइए हम जाने से शुरू करते हैं। मैं चाहता हूँ आप यहाँ सुसमाचार के बारे में सोचें। मेरा मानना है कि यहाँ मसीह उसी के बारे में बात कर रहे हैं। जाओ और सुसमाचार सुनाओ। और उससे मेरा मतलब है, अपनी नौकरी की जगह जाओ, अपने समुदाय में जाओ और लोगों को मसीह के बारे में बताओ। लोगों का मसीह के प्रेम से परिचय कराओ।

इस सप्ताह मैं न्यू ऑरलेन्स में था और मैं समुदाय में विभिन्न स्थानों पर सेवा कर रहा था और यह बहुत ही नम्र करने वाला था। हर जगह मलबा और कचरा था। कुछ छितराए हुए वाहन और बहुत कम लोग थे जो वापस लौट आए थे।

हमारा समूह एक घर में गया, और वह व्यक्ति अपने घर को बना रहा था, पूरे दिन काम करता और रात में वहीं पर सो जाता। फिर अगले दिन काम करता। इस व्यक्ति की एक पृष्ठभूमि है जिसमें जेल और जीवन की कुछ कठिनाईयाँ शामिल हैं। मैं उसे सुसमाचार सुनाने लगा और उसने मसीह पर विश्वास किया। उसने कहा, "मुझे ऐसी आशा चाहिए जिसे कैटरीना जैसे तूफान और बवण्डर हिला न सकें।" और उसने मसीह

पर विश्वास किया। जाने का मतलब यही है। मुझे और आपको बाहर समुदायों में, उन स्थानों में जाना है जहाँ हमारा प्रभाव है और सुसमाचार को सुनाना है और लोगों को मसीह में लाना है।

मैं चाहता हूँ आप देखें कि हम वहाँ रूकते नहीं हैं। हम वहाँ रूकते नहीं हैं। यह चेले बनाने का केवल एक अवयव है। यहीं पर सुसमाचार को एक बुरा स्वरूप मिलता है। सुसमाचार प्रचार का यह अर्थ लगाया जाता है कि आप तमगे हासिल करना चाहते हैं। आप लोगों को मसीह में लाते हैं और फिर उन्हें वहीं लटकते हुए छोड़ देते हैं। वाह, वापस लौटते हैं और कलीसिया को बताते हैं कि हम इतने लोगों को मसीह में लाए हैं। और आप वहीं रूक जाते हैं। यह धर्मशास्त्रीय नहीं है। यह धर्मशास्त्रीय सुसमाचार प्रचार नहीं है। हम लोगों को मसीह में लाने के बाद उन्हें वहीं पर लटकता हुआ नहीं छोड़ते हैं।

मेरी पत्नी और मैं कजाकिस्तान से एक बच्चे को गोद ले रहे हैं, आशा है कि अगले छह से आठ महीनों में हम कजाकिस्तान से एक छोटे से शिशु को गोद लेंगे। और जब हम वहाँ जाकर अपने बच्चे को लेकर वापस लौटते हैं तो हम अपने बच्चे को बाहर छोड़कर यह नहीं कहेंगे कि, तुम्हारा भाग्य अच्छा है, अमरीका में आनन्द मनाओ। माता–पिता के रूप में हम ऐसा नहीं करेंगे। कलीसिया में हम बिल्कुल यही करते हैं, क्या ऐसा नहीं है? लोगों को मसीह में लाते हैं और उनसे अपेक्षा रखते हैं कि वे स्वयं यह सोचें कि मसीह के पीछे कैसे चलना है, यहीं से यह आरम्भ होता है।

बपतिस्मा देना

वह आगे क्या कहता है? उन्हें बपतिस्मा देना। जब आप बपतिस्मा के बारे में सोचते हैं, मैं चाहता हूँ आप लोगों को विश्वास में स्थिर करने के बारे में सोचें। सुसमाचार सुनाएँ और लोगों को स्थिर करें। इसीलिए बपतिस्मा इतना महत्वपूर्ण है।

अब, मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ। यदि आपने मसीह पर विश्वास किया है और कभी बपतिस्मा नहीं लिया है, तो मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप वह कदम उठाएँ और पाप के लिए मरने तथा जीवन के लिए जी उठने के इस प्रतीक के साथ सार्वजनिक रूप से मसीह और उसकी कलीसिया से जुड़ें। इसका मतलब यही है। अतः हम लोगों को मसीह में लाने के बाद कलीसिया में स्थिर होने में उनकी सहायता करते हैं।

सिखाना

और फिर उन्हें पीछे चलना सिखाना, वह सब मानना सिखाना जिसकी मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है। अतः, हमें जाना है, बपतिस्मा देना है, और फिर सिखाना है। हम उन्हें मसीह के पीछे चलने के लिए तैयार करते हैं, सुसमाचार सुनाते हैं, लोगों को विश्वास में स्थिर करते हैं, और फिर उन्हें मसीह के पीछे चलने के लिए तैयार करते हैं। उन्हें प्रार्थना करना सिखाएँ। उन्हें परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना सिखाएँ। उन्हें सुसमाचार सुनाना सिखाएँ।

अब, यह विशाल है और हम वास्तव में यहाँ चूक जाते हैं, हम इससे चूक जाते हैं जब हम इस भूमिका को, चेले बनाने, लोगों को मसीह के पीछे चलना सिखाने को विभिन्न कार्यक्रमों में पदावनत कर देते हैं। और हम कहते हैं, "संगठन उन्हें संभाल लेगा।" हम कहते हैं, "यदि कोई मसीह में आता है तो हम शायद बपतिस्मा के द्वारा उन्हें कलीसिया में स्थिर करने में सहायता करेंगे, लेकिन फिर उन्हें मसीह के पीछे चलने की शिक्षा देने का कार्य छोटे समूह पर छोड़ देते हैं। या हम उन्हें रविवार सुबह की आराधना सभाओं के भरोसे छोड़ देते हैं कि उनसे वे मसीह के पीछे चलना सीख लेंगे।"

कृपया मुझे सुनें, ये दोनों अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, दोनों बाइबल के अनुसार संगति हैं कि आप विश्वास के समुदाय के साथ बाइबल के अध्ययन में शामिल हैं। आराधना में आना, परमेश्वर के वचन के प्रचार को सुनना बहुत बड़ी बात है।

मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ, यदि आप किसी व्यक्ति को मसीह में लाते हैं और वे मसीह के साथ चलना शुरू करते हैं, तो उन्हें प्रार्थना करने के बारे में सिखाने का सर्वाधिक प्रभावशाली तरीका क्या होगा? उन्हें प्रार्थना के बारे में किसी बाइबल अध्ययन में भेजना या उन्हें आपके मनन के समय में बुलाना और कहना, "मैं आपको दिखाता हूँ कि प्रार्थना कैसे की जाती है। मैं आपको दिखाता हूँ कि मैं ने प्रार्थना के बारे में क्या सीखा है और मैं प्रतिदिन कैसे प्रार्थना करता हूँ।" इनमें से कौन सा तरीका अधिक प्रभावी होगा?

बाइबल अध्ययन के बारे में सिखाने के बारे में आपका क्या विचार है? क्या अधिक प्रभावी होगा, उन्हें किसी छोटे समूह में भेजना, जहाँ वे बाइबल का अध्ययन करना सीख सकें? हाँ, यह सहायक हो सकता है, लेकिन शायद उससे भी अधिक प्रभावी यह होगा कि आप उन्हें अपने बाइबल अध्ययन में बुलाएँ और उन्हें दिखाएँ कि मैं हर दिन इस तरह बाइबल पढ़ता हूँ। मैं ये सवाल पूछता हूँ। मेरे बाइबल अध्ययन में मैं यह करता हूँ। यह बहुत अच्छा होगा, क्या नहीं?

यह हमारे जीवनों का व्यक्तिगत निवेश है। इसमें बहुत अधिक समय लगता है। यह वास्तव में संबंधों को बनाना है। यीशु वास्तव में इसी के बारे में बात कर रहे हैं। किसी व्यक्ति को सुसमाचार प्रचार के बारे में सिखाने का सर्वाधिक प्रभावशाली तरीका क्या होगा, उन्हें गवाही प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में शामिल करना? या यह कि आप उन्हें अपने साथ लेकर जाएँ और उन्हें दिखाएँ कि आप दूसरे लोगों को सुसमाचार कैसे सुनाते हैं?

जब इसकी बात आती है तो हम में से बहुत से लोग अत्यधिक असहज हो जाते हैं और मेरा अनुमान है कि हम में से बहुत से लोगों को कभी किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहने और उससे सीखने का मौका नहीं मिला है जो अपने विश्वास को बाँटने में सक्रिय हो। मुझे याद है जब मैं ने पहली बार सुसमाचार सुनाया था। मैं उसमें फँस गया था। यह एक धोखा था। यह पहला व्यक्ति था जिसने मुझे मसीह के पीछे चलने के बारे सिखाना शुरू किया था। उसने मुझे और मेरे एक मित्र को निमंत्रण दिया, एक दिन हम विद्यालय से बाहर थे और उसने हमसे कहा कि चलो हम कुछ मजेदार करते हैं।" और हमने कहा, "चलो, हम तैयार हैं।"

हम वहाँ पहुँचते हैं और वह एक वीडियो कैमरा निकालता है और कहता है, हम कुछ खेल खेलेंगे और फिर हम कुछ किशोरों के पास जाकर उनका वीडियो लेंगे। हम उनसे पूछेंगे कि वे यीशु के बारे में क्या सोचते हैं। वे यीशु के बारे में क्या विश्वास करते हैं।" हमने पूछा, "क्या हम खेल भी सकते हैं?" और उसने कहा, "हाँ, हम वह भी करेंगे।" और हमने यही किया। कुछ समय तक हम खेले और कुछ समय बाद वह लोगों के वीडियो लेने लगा और मैं और मेरा मित्र, हम उसके पीछे खड़े होकर सोच रहे थे कि अगला खेल कब शुरू होगा।

और एक बार वह अपना वीडियो कैमरा हाथ में लेकर एक किशोर से पूछता है, "यीशु के बारे में तुम क्या सोचते हो?" वह किशोर बात कर रहा है और यह व्यक्ति कैमरे को नीचे रख देता है और वह कहता है, "मेरे मित्र डेविड का यीशु के साथ व्यक्तिगत संबंध है। और वह आपको बताएगा कि यीशु का उसके लिए क्या अर्थ है।" मैं तो केवल खेलने के लिए आया था। और वहाँ, उस परिस्थिति में मुझे पहली बार अपने विश्वास को बाँटने का मौका मिला।

और मैं ईमानदारी से कहूँगा कि मैं सम्मोहित था क्योंकि मैं ने इसे होते हुए देखा था और किसी व्यक्ति ने अपना जीवन मुझ में उण्डेलकर मुझे दिखाया था कि इसे करने का क्या मतलब है। यह विशाल है। क्या मैं

आप से एक सवाल पूछ सकता हूँ? मैं चाहता हूँ कि आप ईमानदार बने रहें। मैं चाहता हूँ आप कल्पना करें कि कल आपको किसी व्यक्ति को मसीह के विश्वास में लाने का मौका मिलता है। कल्पना करें कि कल आपकी नौकरी के स्थान पर, आपके घर में, या आपके समुदाय में, कल आपको किसी व्यक्ति को मसीह के विश्वास में लाने का मौका मिलता है।

मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ, "आप उनके साथ क्या करेंगे?" अगले छह महीने उन्हें यीशु के पीछे चलने के बारे में सिखाने की आपकी योजना क्या है? क्या आपके पास उसके लिए कोई योजना है? यदि आज मैं एक–एक करके आप से बात करता और आप से पूछता कि किसी व्यक्ति को मसीह में लाने के बाद आपकी योजना क्या है? यदि इस सप्ताह आप किसी व्यक्ति को मसीह में लाते हैं, तो अगले छह सप्ताह आप उनके साथ क्या करेंगे, क्या आपके पास कोई योजना है? जो बता सके कि, "उन्हें मसीह के पीछे चलना सिखाने के लिए मैं यह करूँगा?"

मेरा अनुमान है कि हम में से अधिकाँश के पास ऐसी कोई योजना नहीं है। और मेरे विचार से यह दो में से एक बात का संकेत देता है। या तो यह संकेत देता है कि कल किसी व्यक्ति को मसीह में लाने की हमारी कोई योजना नहीं है, जो कि एक समस्या है, या यह कि हम कभी किसी व्यक्ति को मसीह में लाना चाहते हैं और उसके बाद हम मसीह के पीछे चलने के लिए उन्हें उनके हाल पर छोड़ देंगे, यह भी एक समस्या है। हमें चेले बनाने में निपुण होने की जरूरत है।

अब, यह एक बड़ा समर्पण है। यह नाव के पीछे से नाव में सामने की ओर आना है। किसी दूसरे को प्रार्थना करना सिखाने के लिए जरूरी है कि पहले आप प्रार्थना करें। यदि किसी दूसरे को बाइबल अध्ययन के बारे में सिखाना है, तो आप जानते हैं कि आपको क्या करना चाहिए? बाइबल का अध्ययन करना चाहिए। किसी दूसरे व्यक्ति को अपने विश्वास को बाँटने के बारे में सिखाने के लिए जरूरी है कि आप अपने विश्वास को बाँटें, लेकिन यह तब होता है जब विश्वास का समुदाय इसकी जिम्मेदारी ले इस कार्य में लग जाए, यदि ऐसा होता है तो कलीसिया में क्या होगा?

बढ़ाना

इसके बारे में सोचें। जाना, बपतिस्मा देना, सिखाना और उसका परिणाम यह है, मैं इसमें चौथे अवयव को जोड़ने जा रहा हूँ। हम इसे पवित्रशास्त्र में नहीं देखते हैं, लेकिन मेरे विचार से उसमें यह अर्थ है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि जब हम जाने और बपतिस्मा देने और सिखाने लगते हैं, तो परिणाम यह होता है

कि हम बढ़ने लगते हैं। हम लोगों को सुसमाचार सुनाते हैं और स्थिर करते हैं और उन्हें मसीह के पीछे चलने के लिए तैयार करते हैं और इसका मतलब है कि हम अपने जीवन और परमेश्वर द्वारा हमारे अन्दर किए गए कार्य को दूसरों के जीवनों में बढ़ाने लगते हैं, हम दूसरों के जीवनों में बढ़ने लगते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हम अपने प्रतिरूप बना लेते हैं। हम हमारे जैसे अधिक लोगों को नहीं चाहते हैं। लेकिन हम यह अनुभव करने में लोगों की सहायता करने लगते हैं कि परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए वरदानों, दक्षताओं, और व्यक्तित्वों के साथ मसीह के समान बनने का क्या मतलब है और हम उनमें मसीह के स्वरूप को बढ़ाते हैं। चेले बनाने का मतलब यही है।

समस्या यह है कि हम इससे पूरी तरह चूक जाते हैं। बहुत बार कलीसिया में हम गुणात्मक वृद्धि को लेकर जोड़ में बदल देते हैं। और हम महान आज्ञा के पूरे बिन्दू से चूक जाते हैं।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ कल्पना करें कि आपकी कलीसिया भरी हुई है। कल्पना करें कि एक साथ मिलकर, एक साथ कार्य करने के द्वारा आपकी कलीसिया अगले वर्ष में हर दिन एक व्यक्ति को मसीह में लाने में सक्षम होती है। बहुत ही उत्साहजनक है, अगले वर्ष इस समय तक 365 लोग मसीह में आ जाएँगे। कल्पना करें कि आप ऐसा करना जारी रखते हैं, आपकी कलीसिया आने वाले वर्षों में ऐसा करना जारी रखती है। अब से तीस साल बाद, मेरे विचार से 33 साल बाद, लगभग 13,000 से अधिक लोग मसीह में आ जाएँगे। यह बहुत उत्साहजनक है। आप अपने शहर की खोई हुई जनसंख्या में थोड़ी कमी लाएँगे। मैं आप को एक और दृश्य के बारे में बताता हूँ।

यदि आपकी कलीसिया का केवल एक सदस्य, केवल एक, अगले वर्ष में हर दिन एक व्यक्ति को मसीह में लाने की बजाय, केवल एक व्यक्ति को विश्वास में लाता है, लेकिन आप वहाँ रूकते नहीं हैं। लेकिन मान लें कि आप यीशु के शब्दों को मानते हैं और उन्हें बपतिस्मा लेने का महत्व दिखाते हैं और आप उन्हें मसीह के पीछे चलने के लिए तैयार करते हैं, तो उस वर्ष के अन्त तक, वे बाहर जाकर किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में वही कार्य करने में सक्षम हो जाएँगे और आप गुणात्मक वृद्धि की यीशु की बात को मानने लगते हैं। और, अगले साल दो व्यक्ति बाहर जाएँगे और फिर चार जाएँगे।

और, रूचिकर बात यह है, आप हिसाब लगाकर देखें, जितने समय में आपने 13,000 लोगों को मसीह में आते हुए देखा था, उतने ही समय में इस परिदृश्य में आप चार अरब लोगों को मसीह में आते हुए देखेंगे। शायद यीशु को पता था कि वे क्या कह रहे थे। कलीसिया, हिसाब लगाकर देखो। क्या आपकी कलीसिया

का सपना 5,000 या 10,000 की संख्या तक बढ़ना है? आपका सपना बहुत कमजोर है। परमेश्वर आपकी कलीसिया और उसमें शामिल परिवारों के द्वारा लाखों लोगों को मसीह में लाना चाहता है।

मुझे इस पर विश्वास है। आप कहेंगे कि यह आदर्श हो सकता है, नहीं, यह मसीह की योजना है। इसीलिए प्रेरितों के काम 1 में, 120 लोग एक साथ एकत्रित हुए, प्रेरितों के काम 2 में पवित्र आत्मा उन पर उतरा और शेष अध्यायों में हम देखते हैं कि इन 120 लोगों ने जो सर्वाधिक योग्य नहीं थे, मसीह के लिए पूरे संसार को उलट–पुलट कर दिया। इसे आप कैसे करते हैं? इसका कारण यह है कि उन्होंने यीशु में चेले बनाने के कार्य को देखा था। वे अपने जीवनों से दूसरों के जीवनों में गुणात्मक वृद्धि करने लगे। और वे मसीह की महिमा के लिए देशों को प्रभावित करने लगे। योजना यही है।

इसके बारे में सोचें। संसार में छह अरब बीस करोड़ लोग हैं। आपका जीवन मसीह की महिमा के लिए देशों पर कैसे प्रभाव डाल सकता है? आप जाते हैं। आप लोगों को मसीह के अनुयायी बनने में अगुवाई करते हैं, वे विश्वासी बनते हैं। लेकिन, आप एक चेला बनाएँ। आप लोगों को बपतिस्मा देते हैं और वे मसीह के स्थिर चेले बनते हैं। और फिर, आप वहाँ रूकते नहीं हैं, आप उन्हें मसीह के पीछे चलना सिखाते हैं और वे चेले बनाने वाले बनते हैं। और फिर आप गुणात्मक वृद्धि करते हैं और इस प्रकार परमेश्वर के वचन और मसीह के अधिकार के आधार पर आपकी कलीसिया मसीह की महिमा के लिए देशों पर प्रभाव छोड़ सकती है।

अब, क्या यह योजना शामिल होने के योग्य है? मुझे ऐसा ही लगता है। इसे रोका नहीं जा सकता। यह निश्चित है। योजना यहाँ बताई गई है। लेकिन ईमानदारी से सोचें कि आज हम कलीसिया में यीशु द्वारा हमें करने के लिए कही गई एक बात को छोड़कर बाकी सब कुछ करने के लिए तैयार हैं। पवित्रशास्त्र में कहीं भी, सुसमाचार में कहीं भी, यीशु हमें महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों या सेमिनारियों का निर्माण करने के लिए नहीं कहते हैं। आप कहेंगे, "डेविड, उनमें से एक से तुम्हें तनख्वाह मिलती है।" सही है। आपने बिल्कुल सही कहा है, लेकिन यीशु ने ऐसा करने के लिए नहीं कहा है। कहीं भी वह रविवारीय कक्षाओं या छोटे समूहों की स्थापना करने के लिए नहीं कहता है। ऐसा करने के लिए नहीं कहता है। कहीं भी वह भवनों का निर्माण करने के लिए नहीं कहता है। कभी नहीं कहता है।

अब, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह सब अच्छा नहीं है। मैं कह रहा हूँ कि वे बहुत अच्छे हो सकते हैं। यीशु ने हमें उन कार्यों को करने के लिए नहीं कहा है। उसने हमें एक काम करने के लिए कहा है, संसार

के प्रत्येक हिस्से में चेले बनाओ। और जब तक छोटा समूह या सेमिनारी या एक भवन संसार के प्रत्येक हिस्से में चेले बनाने के कार्य में अधिक प्रभावशाली बनने में हमारी सहायता करता है, तब तक आप ऐसा ही करें। लेकिन जब आपका ध्यान उन बातों पर केन्द्रित हो जाता है और हम उस एक कार्य को अनदेखा करने लगते हैं जिसे उसने हमें करने के लिए कहा है, तो हम एक कलीसिया के रूप में हमारे मिशन से पूरी तरह चूक गए हैं।

अब, मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ जो इसे समाप्ति की ओर लाने में हमारी सहायता करेगा। मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। मैं आप से पूछना चाहता हूँ, क्या आप प्राप्त करने वाले हैं या पुनः उत्पादन करने वाले हैं? क्या आप पाने वाले हैं या पुनः उत्पादन करने वाले हैं? इसे समझाने के लिए मैं आपको सूडान ले जाना चाहता हूँ।

हम सूडान जाते हैं और हमारा लक्ष्य चेले बनाने में कलीसियाई अगुवों को प्रशिक्षित करना है। अब, जब मैं पहली बार इस यात्रा पर जाने के लिए तैयार हुआ था तो मैं ने सोचा था कि हम सूडान में जा रहे हैं और हम लोगों की भीड़ से प्रचार करेंगे और लोगों को मसीह में लाएँगे। और, यात्रा का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति ने कहा, "नहीं, डेव। हम ऐसा करने के लिए नहीं जा रहे हैं।" वह कहता है, "हमारे लिए अधिक प्रभावशाली यह होगा कि हम जाकर कुछ अगुवों को प्रशिक्षण दें जो वहाँ रहने वाले लोगों की भीड़ के लिए इस कार्य को कर सकते हैं।" और मैं ने कहा, "हाँ, यह अच्छी बात है। यह अधिक प्रभावी होगा।"

हम इस तरह से नहीं जाएँगे कि गोरे लोग संसार को उद्धार दे रहे हैं। हम जाकर उन्हें प्रशिक्षण देंगे, हमने हमारे समय को केवल उन लोगों तक सीमित किया जो अंग्रेजी बोल सकते थे क्योंकि इस तरह से उन्हें सिखाने के लिए हमने सामग्री को दोगुना कर दिया था। वे कलीसियाई अगुवे जो जाकर दूसरों को ये बातें सिखा सकते थे। और, हमने ऐसा ही किया।

मैं हर दिन मिट्टी की उस झोंपड़ी में जाता जहाँ सूडानी कलीसिया के अगुवे एकत्रित होते थे। यह आश्चर्यजनक था। मुझे याद है जब मैं अन्दर जाता तो वे सब लोग शिक्षक के सम्मान में खड़ हो जाते थे। इससे मैं हैरान हो गया। मैं आप को बताना चाहता हूँ कि ऐसा संयुक्त राज्य की सेमिनारी की कक्षा में कभी नहीं हुआ है, जो भी हो, मैं अन्दर जाता और ये लोग वहाँ बैठते जो कई तरह से विश्वास में मेरे नायक थे।

मुझे याद है एक व्यक्ति मेरी बाँई ओर बैठा था। एक बुजुर्ग व्यक्ति, जो लगभग अन्धा था क्योंकि उसने पिछले तीन वर्ष अपने कबीले की भाषा में पवित्रशास्त्र का अनुवाद करने में व्यतीत किए थे। अद्भुत व्यक्ति।

हम गीत गाते और फिर हम बैठ जाते और फिर मैं उन्हें चेले बनाने के बारे में सिखाने लगता और ऐसा करने के दौरान, सिखाते समय, मैं उनके चेहरों को बहुत मुश्किल से देख पाता था। शायद ही कभी मैं ने उनकी आँखों को देखा हो, क्यों? क्योंकि वे सो रहे थे? क्योंकि वे दिन में सपने देख रहे थे? क्योंकि वे ध्यान नहीं दे रहे थे? नहीं। उनके सिर नीचे झुके थे और वे मेरी हर एक बात को लिख रहे थे। वे बाद में मेरे पास आकर कह सकते थे, "डेव, हमारा मानना है कि हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम वह सब लिखें जो आपने हमें सिखाया है, इसका हमारी भाषा में अनुवाद करें और फिर हमारे कबीलों में इसे सिखाएँ।"

इसीलिए पिछले 20 वर्षों में गृहयुद्ध के बीच में भी सूडान में मसीहियत चौगुनी हो गई है, क्योंकि लोगों का कहना था कि मसीह हमें जो देता है वह केवल हमारे लिए ही नहीं है, दूसरों के लिए भी है। और इसने उनके सुनने के तरीके को बदल दिया। वे इसलिए सुनते थे क्योंकि वे उसे किसी दूसरे के जीवन में उण्डेलने के लिए तैयार थे। क्योंकि वे अपना जीवन गुणात्मक वृद्धि में लगा रहे थे। यही बात मैं ने होण्डुरास में भी देखी।

और, इसलिए मैं आप से पूछना चाहता हूँ, क्या हम पाने वाले हैं या पुनः उत्पादित करने वाले? हम में से कितने लोग ईमानदारी से यह कह सकते हैं कि हम परमेश्वर के वचन को इस इच्छा के साथ सुन रहे हैं कि हमने जो सीखा है उसे हम इस सप्ताह किसी दूसरे व्यक्ति को सिखा सकें।

यह हमारे सुनने के तरीके को चुनौती देता है। यह मसीहियत को देखने के हमारे तरीके को बदल देता है। हम में से बहुत से लोग आराधना सभा में आने और बैठने में बहुत अच्छे हैं, और यदि हम सुनते भी हैं, तो हम केवल तृप्त होने और पाने के लिए सुनते हैं और यह सुनने का आत्म–केन्द्रित तरीका है। यह परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने का आत्म–केन्द्रित तरीका है। क्या होता है, जब आप परमेश्वर–केन्द्रित बनते हैं और कहते हैं, "जो मुझे सौंपा गया है, वह केवल मेरे लिए नहीं है। यह केवल यहाँ के लोगों के लिए नहीं है। यह देशों के लिए है ताकि वे भी जान सकें कि परमेश्वर कितना अच्छा है।" जब हम प्राप्त करना बन्द करके पुनः उत्पादित करना शुरू करते हैं, तो क्या होता है?

यह हम में से अधिकाँश के विचारों और मानसिकता से बिल्कुल अलग है। मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ, क्या होगा यदि रविवार सुबह जो कलीसिया में होता है वह शहर भर में और सारे राष्ट्रों में पुनः उत्पादित किया जाने लगे। वाह, यही इसकी खूबसूरती है।

यह धर्मशास्त्रीय सत्य है, और मेरी प्रार्थना है कि आपके मनों में आपको इसका निश्चय हो। वह धर्मशास्त्रीय सत्य, जिसके लिए आपको रचा गया है। आप, न केवल आपके बराबर वाला व्यक्ति, आपके सामने, आपके पीछे वाला व्यक्ति, आपको मसीह की महिमा के लिए आपके शहर और सारी जातियों को प्रभावित करने के लिए रचा गया है। यह कोई विकल्प नहीं है। हम इस मिशन को लेते हैं और सोचते हैं, "मैं अपने शहर में रहूँगा और दूसरे लोग वहाँ जाएँगे।" नहीं, इसमें दोनों हैं। हम एक वैश्विक मिशन में शामिल हैं। हम सबको मसीह की महिमा के लिए हमारे शहर और सारी जातियों पर प्रभाव छोड़ने के लिए रचा गया है।

और मुझे निश्चय है कि यदि परमेश्वर के लोग परमेश्वर की बात को मानने लगें और कहें, हम अपने आप को इस योजना को पूरा करने में लगा देंगे। और हम लोगों की भीड़ और कार्यक्रमों और इन सारी बातों के साथ नहीं गिने जाएँगे, इसलिए नहीं कि ये बातें अच्छी नहीं हो सकती हैं, लेकिन इसलिए क्योंकि हमारे जीवनों का, हमारे परिवारों का और हमारी कलीसिया का केन्द्र एक ही मिशन होगा, सारी जातियों को चेला बनाना। यदि हम उसकी बात को मानते हैं, तो मैं सोच रहा हूँ कि वह क्या करेगा।

एक योजना है। सारी जातियों को चेला बनाना। इसका आपके जीवन में क्या असर होगा? अच्छा है कि परिच्छेद यहाँ समाप्त नहीं होता है, यह कठिन है। मेरे जीवन से वैश्विक प्रभाव कैसे पड़ेगा? जाना, बपतिस्मा देना, सिखाना, इन सारी बातों को करना कठिन है। ये ऐसी बातें नहीं हैं जिनमें हम आरामदायक महसूस कर सकें और वे ऐसी बातें भी नहीं है जिन्हें करने का हम में से बहुत से लोगों के पास बहुत अधिक अनुभव हो। हम इसे कैसे करते हैं?

मसीह की उपस्थिति

हमने मसीह की सामर्थ और मसीह की योजना को देख लिया है, लेकिन अब हम मसीह की उपस्थिति पर आते हैं। और मैं चाहता हूँ आप इसे देखें। मैं चाहता हूँ आप इस परिच्छेद में मसीह की उपस्थिति के महत्व को देखें। हम वहाँ नहीं जाएँगे, लेकिन मत्ती 1:21–22. उसे लिख लें और बाद में कभी उसे देखें क्योंकि मत्ती यीशु का अपना परिचय मत्ती 1 में शुरू करता है और वह कहता है कि एक व्यक्ति आ रहा है जिसका नाम इम्मानुएल है और उस नाम का क्या मतलब है? परमेश्वर हमारे साथ।

अब, मत्ती अपने सुसमाचार की शुरूआत यीशु के परिचय के साथ करता है। हम अन्त की ओर आते हैं और यीशु को कहते हुए देखते हैं, जगत के अन्त तक सदैव मैं तुम्हारे साथ हूँ। मत्ती यहाँ पर एक बहुत बड़ी बात कह रहा है। कि यह मिशन हमारे अन्दर मसीह की उपस्थिति पर निर्भर है। मैं चाहता हूँ आप देखें, हमें अन्दर वास करने वाली उपस्थिति के द्वारा विवश किया जाता है। मसीह हमारे अन्दर रहता है। उसका दिल हमारे दिल के साथ धड़कता है और जब ऐसा होता है, जब वास्तव में ऐसा होता है और हम अपने आप को सारी जातियों को चेला बनाने में देना शुरू करते हैं तो हम उसकी उपस्थिति पर निर्भर रहते हैं और हमें उसकी उपस्थिति की जरूरत है।

देखें, बात यह है, हम पवित्रशास्त्र से जानते हैं, पवित्रशास्त्र के दूसरे स्थानों से हम जानते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ रहने का वायदा किया है। यह एक गारण्टी है। हम सब, जिनका मसीह के साथ संबंध है, हम जानते हैं कि परमेश्वर न तो कभी हमें छोड़ेगा और न ही त्यागेगा। इसे हम सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में देखते हैं। तो यीशु इस बात को यहाँ क्यों कहते हैं?
मेरे विचार से वह यह कह रहे हैं, कृपया मुझे सुनें। नये नियम की मूल भाषा में, यीशु कह रहे हैं, "ऐसा नहीं है कि इसमें कोई सन्देह होगा कि मेरी उपस्थिति तुम्हारे साथ है या नहीं, लेकिन तुम्हारे जीवन में और कलीसिया में मेरी उपस्थिति की सामर्थ का अहसास तुम्हें केवल तभी होगा जब तुम पूरी तरह से इस मिशन के लिए समर्पण करोगे।"

हमें उसकी सामर्थ का अहसास, उसकी उपस्थिति की सामर्थ का अहसास, केवल तभी होगा जब हम इस मिशन को लिए पूरी तरह समर्पण करेंगे। यीशु कह रहे हैं, सामने की ओर आओ और सारी जातियों को चेले बनाना शुरू करो। कलीसिया, इसे बनाना शुरू करो। परिवारो, इसे करना शुरू करो। विद्यालय में जाते हुए विद्यार्थी कहें, "मैं सारी जातियों को चेले बना रहा हूँ।" आप मसीह की उपस्थिति की सामर्थ पर निर्भर

रहने लगेंगे और अपने जीवन में मसीह की उपस्थिति की सामर्थ को इस प्रकार अनुभव करेंगे जैसा आपने पहले कभी नहीं किया होगा।

मैं इसकी गारण्टी देता हूँ। उसने अपनी उपस्थिति को दिखाने का वायदा किया है। यदि आप लोगों को मसीह की ओर लाने में शामिल रहे हैं, तो आप जानते हैं। या यदि आप कभी किसी मिशन यात्रा पर गए हैं, या आप सारी जातियों को चेला बनाने के कार्य में शामिल रहे हैं। आप जानते हैं कि उन समयों में आपको वास्तव में मसीह की उपस्थिति की आवश्यकता का अहसास होता है।

मुझे सूडान की यात्रा याद है। यह हृदय को झकझोरने वाली यात्रा थी, मुझे पता था कि मैं एक ऐसे स्थान पर जा रहा हूँ जहाँ हाल ही में बमबारी हुई थी और मैं ने हेदर के साथ बैठकर इस यात्रा में शामिल कुछ खतरों के बारे में बात की। और यह कठिन था।

मुझे याद है, हमने केन्या के ऊपर से उड़ान भरी। सूडान में जाने से पहले हमने कुछ रातें केन्या में बिताई थी। सूडान में प्रवेश करने की पिछली रात को यात्रा का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति ने हम सबको इकट्ठा किया और कहा, "दोस्तो, सूडान में ऐसे कुछ खतरे और जोखिम हैं जिनके बारे में हमने बात नहीं की है और हमें उनके बारे में बात करने की जरूरत है।" वह बताने लगता है और कहता है, "दोस्तो, तुम्हें पता होना चाहिए कि सूडान में बहुत अधिक साँप हैं।"

अब, कुछ लोग सोचते हैं कि साँप अच्छे होते हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ। मैं साँपों का प्रशंसक नहीं हूँ। वह व्यक्ति कहता है कि संसार के सर्वाधिक विषैले आठ साँपों में से छह सूडाने में पाए जाते हैं, और वह नाम बताने लगता है, हरा माम्बा, काला माम्बा। यह साँप और वह साँप। और हम वहाँ चुपचाप बैठे थे और पसीन बह रहा था और वह हँसता है जैसे कि कोई मजाकिया बात हो, लेकिन ऐसा नहीं था, वह कहता है, "यदि साँप आपको डसता है तो हमारे पास ईलाज के लिए किट है, लेकिन ये किट इन साँपों के लिए नहीं बनाई गई हैं।" वह कहता है, "यदि आपको साँप डसता है, तो हम प्रार्थना करेंगे और देखेंगे कि परमेश्वर क्या करता है।"

वह हमें एक सूडानी व्यक्ति द्वारा बताई गई कहानी सुनाने लगता है कि वह व्यक्ति इन अफ्रीकी झाड़ियों के बीच में अपने पशुओं को चरा रहा था। और एक हरा माम्बा पेड़ों में छिपा हुआ था जो नीचे आया और उसने एक–एक करके चार गायों को डस लिया और वे गायें उसी पल, वहीं पर गिरकर मर गईं।

कहने की जरूरत नहीं है कि उस रात हम ज्यादा नहीं सो पाए। उस रात बिल्कुल नहीं सो पाए। मैं ने जागकर भजन 91 को याद किया क्योंकि उसमें लिखा है, "तू सिंह और सर्प को कुचलेगा।" ठीक है, तू कोबरा को कुचलेगा और मैं ने पूरे भजन को याद कर लिया ताकि वहाँ जाते समय मैं तैयार रहूँ। अतः मुझे याद है, जब हम अगली सुबह उठे, विमान में बैठे और सूडान में गए। हमारे सामान को लिया और नदी के रास्ते से होकर चले, जो एक अलग ही कहानी है। यह एक नदी है जो मगरमच्छों से भरी है और वहाँ पर एक डोंगी थी जिस पर चढ़कर हमें नदी के दूसरे किनारे पर उतरना था।

हम डोंगी पर चढ़ते हैं, नदी के दूसरे किनारे की ओर जाते हैं और वहाँ पहुँचते ही, किनारे पर एक ट्रक हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। हमने अपना सारा सामान उसमें रखा और जब चढ़ने लगे तो पता चला कि सब लोगों के लिए अन्दर जगह नहीं है, इसलिए कुछ हल्के लोगों को ट्रक की छत पर बैठना होगा। अतः, उन्होंने कहा, "डेव, अब तुम्हारी बारी है। हम चाहते हैं कि तुम ट्रक की छत पर बैठो।" और मैं ने कहा, "ठीक है, मैं वास्तव में सूडान में आने के लिए बहुत उत्साहित था।" मैं छत पर चढ़ा और हम आगे बढ़ने लगे और मैं ने अपने सामने नजर डाली और देखा कि हम अफ्रीकी झाड़ियों के बीच में प्रवेश करने वाले थे और वहाँ हर कहीं पेड़ ही पेड़ थे और पिछली रात की तस्वीर मेरे सामने आने लगी।

और मैं अपने हाथों को उठाकर कहने लगा, "तू सिंह और नाग को कुचलेगा। तू विषैले सर्प को अपने पैरों तले रौंदेगा।" और पूरी यात्रा के दौरान मैं यही कर रहा था। उन कुछ सप्ताहों के दौरान हम जहाँ भी गए, मैं हमेशा साँपों की खोज में रहता। हमेशा इस बात का ध्यान रखता कि यदि हम किसी निशान को देखते हैं, तो यह साँप हो सकता है। रात में बिस्तर पर लेटे हुए, इस मिट्टी की झोंपड़ी में जाना जिसकी छत घास–फूस की थी, जिसका मतलब है कि कुछ भी उसके अन्दर आ सकता है। हम उस सूडानी रात के अन्धेरे में जाकर सोए और हमारे ऊपर एक मच्छरदानी थी, जैसे कि वह सब कुछ कर सकती है। दीवार पर मकड़ी आती, और मैं मकड़ियों से तो निपट सकता हूँ, और हम लेट जाते और चुपचाप रहते, लेकिन तभी बाहर कुछ आवाजें आने लगती। और हम अपनी टॉर्च जला कर चारों ओर देखने लगे। और फिर हमें पता चला कि टॉर्च को बन्द रखना बेहतर था और हम रात में सो जाते और प्रार्थना करते कि प्रभु सुबह उठने में मेरी सहायता कर, धन्यवाद प्रभु।

और हम जहाँ भी गए, हमने जो कुछ किया, हम निरन्तर उसकी उपस्थिति पर निर्भर थे। मैं यह बताना चाहता हूँ कि मसीही जीवन को इसी प्रकार जीना ही अपेक्षित है। परन्तु मैं चाहता हूँ आप देखें कि जब

तक आप नाव में पीछे हैं, आपको इस तरह मसीह की उपस्थिति की जरूरत नहीं होगी। आपको इसकी जरूरत नहीं होगी। आप उस पर निर्भर नहीं रहेंगे। आप उसकी उपस्थिति को देखने की लालसा नहीं रखेंगे। लेकिन जब आप आगे होते हैं और आप अपनी नौकरी के स्थानों में और सारी जातियों में चेले बनाते हैं, तो मैं आपको गारण्टी दे सकता हूँ कि आपको उसकी उपस्थिति की जरूरत होगी और आप उसकी उपस्थिति को इस तरह देखेंगे जैसे आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। उसकी सामर्थ इस शहर में इस तरह प्रकट होगी जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। क्या आपको लगता है कि गीत गाना और मसीह की उपस्थिति को महसूस करना ही सब कुछ है?

मसीह की उपस्थिति सामने रहने के बारे में है। सुसमाचार को सुनाना, चेले बनाना, और चमत्कारी तरीकों से उसे कार्य करते हुए देखना जिसकी आप कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे, लोगों के जीवनों को बदलना और परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए राष्ट्रों को प्रभावित करना। यहीं पर मसीह की उपस्थिति आती है।

मुझे याद है मैं इण्डोनेशिया में एक व्यक्ति से बात कर रहा था और मैं ने उससे पूछा, "तुम मसीह के विश्वास में कैसे आए?" उसने कहा, "मैं इण्डोनेशिया में उत्तरी सुमात्रा के बटाक कबीले का हूँ। एक समय था जब हमारा पूरा कबीला मुसलमान था, पूरी तरह मुसलमान। एक बार एक बैपटिस्ट मिशनरी जोड़ा हमारे बीच में आया और वे हमें सुसमाचार सुनाने लगे।" और उसने कहा, "कबीले के सरदारों ने उनकी बातों को सुना और वे उन्हें अच्छी नहीं लगी और उन्होंने उस मिशनरी जोड़े को मारकर खा लिया।" उसने कहा, "वह मेरे कबीले के इतिहास में सबसे काले दिनों में से एक था। कई वर्षों बाद, एक और मिशनरी आया और वह हमें सुसमाचार सुनाने लगा और इस बार कबीले के सरदारों ने कहा, 'यह व्यक्ति वही बात कह रहा है जो उन्होंने कही थी। शायद हमें सुनना चाहिए।" और उन्होंने सुना। उन्होंने सुना और मसीह पर विश्वास किया। वे मसीह के विश्वास में आए। दो महीनों के अन्दर पूरे कबीले ने विश्वास किया, आज इण्डोनेशिया के उत्तरी सुमात्रा में बटाक कबीले में तीस लाख विश्वासी हैं।

अतः, आप से मेरा प्रश्न है, क्या आप इसे चाहते हैं या नहीं? मेरे विचार से यह सब एक ही सवाल की ओर लाता है। मैं आप से एक प्रमुख सवाल पूछना चाहता हूँ: क्या आप परमेश्वर को एक खाली चैक देने के लिए तैयार हैं?

कृपया मेरी बात को सुनें। मैं किसी से यह कहने के लिए नहीं कह रहा हूँ कि वह अपना सामान बाँधकर अगले सप्ताह कम्बोडिया जा रहा है। और मैं किसी से यह कहने के लिए भी नहीं कह रहा हूँ कि आपके पास इसके बारे में सारे उत्तर हैं कि आपके जीवन में यह कैसा होगा, लेकिन मैं आपको परमेश्वर से यह कहने के लिए कह रहा हूँ कि, ये रहा मेरे जीवन का खाली चैक, मेरे परिवार का खाली चैक। और आप चाहे एक छात्र हों, वयस्क हों, या बुजुर्ग हों, आप कहें, "परमेश्वर, मैं खाली चैक आपको दे रहा हूँ।" कोई शर्त नहीं है। मैं जैसे भी सर्वाधिक प्रभावशाली रूप से सारी जातियों को चेला बना सकता हूँ, मैं बनाऊँगा।

अब, इस प्रार्थना में बहुत अधिक खतरा है। कृपया उस प्रार्थना को हल्के में न लें। कौन जानता है कि परमेश्वर क्या करेगा? मेरा सवाल है कि क्या आप यह कहने के लिए तैयार हैं, "आप प्रभु हैं, मैं अपने आप को और मेरे जीवन में जो कुछ है, वह सब इस मिशन के लिए दे देता हूँ?"

मैं चाहता हूँ आप दो बातों में से एक करें। मैं जानता हूँ कि ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने कभी यीशु को प्रभु नहीं कहा है। आपने कभी उसे अपने दिल में नहीं बुलाया है और आपके पापों को क्षमा करने के लिए नहीं कहा है और आपने कभी भी अपना जीवन उसके लिए समर्पित नहीं किया है, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि वह प्रभु है, वह आपकी सारी आराधना के योग्य है। वह आपके पापों के लिए क्रूस पर मरा। वह कब्र में से जी उठा और आज पहली बार आपके पास उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करने का अवसर है। मैं आपको यह कहने का निमंत्रण देना चाहता हूँ कि, "आज मैं पहली बार यीशु को प्रभु कहना चाहता हूँ।" और इसी समय, वहीं पर, अनन्तकाल के लिए आप अपने जीवन को बदल सकते हैं।

मैं आपको विश्वासियों के रूप में, मसीह पर विश्वास करने वालों के रूप में प्रत्युत्तर देने के लिए निमंत्रित करना चाहता हूँ। आपके जीवन के केन्द्र में एक आज्ञा है। जो सारी जातियों को चेला बनाना है। मैं चाहता हूँ आप पूरी तरह ईमानदार रहें। क्या आपने परमेश्वर को खाली चैक दे दिया है? क्या आपने, आपके परिवार ने उसे खाली चैक दिया है? जब आप अपने पेशे, नौकरी की योजनाओं के बारे में सोचते हैं और इस समय आप जीवन में जहाँ हैं, क्या उसके पास खाली चैक है, और क्या इस समय आपका जीवन इस एक आज्ञा के प्रति समर्पित है, सारी जातियों को चेला बनाना, और यदि नहीं, तो मैं आपको परमेश्वर से यह कहने का निमंत्रण देना चाहता हूँ, "मैं आपको खाली चैक देना चाहता हूँ।" मेरी प्रार्थना है कि आप परमेश्वर से कहें, "मैं आपको खाली चैक देता हूँ। इसका मेरे जीवन में चाहे जो भी मतलब हो, मैं इसे करना चाहता हूँ। आपके द्वारा दिए गए वरदानों, दक्षताओं और व्यक्तित्वों के साथ सारी जातियों को चेला बनाने के लिए जो कुछ भी करना होगा, मैं करूँगा।"

मैं व्यक्तिगत रूप से आपको निमंत्रण देना चाहता हूँ और उसके फलस्वरूप पूरी कलीसिया एक साथ परमेश्वर के सिंहासन के सामने आए और कहे, "हम आपको खाली चैक देते हैं। हम सारी जातियों को चेला बनाना चाहते हैं। हम चाहते हैं हमें यही चिन्ता लगी रहे। हम चाहते हैं यह हमें जकड़ ले। और हम मसीह की महिमा के लिए शहर और राष्ट्रों को प्रभावित करना चाहते हैं।" और मैं चाहता हूँ कि आप पहली बार या बहुत लम्बे समय बाद, पहली बार परमेश्वर से कहें, "मैं तैयार हूँ।"

परमेश्वर, इस मिशन के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। हमें शामिल करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। परमेश्वर, हम आपकी स्तुति करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि एक दिन आ रहा है जब हम सब मसीह के सिंहासन के सामने दण्डवत् करेंगे और उसकी स्तुति करेंगे और परमेश्वर, हम चाहते हैं कि आपके सुसमाचार को और आपकी महिमा को फैलाने के लिए आप अब, और उस दिन हमारा उपयोग करें। परमेश्वर हम आपके वचन पर विश्वास करना चाहते हैं और यह कहना चाहते हैं कि चेले बनाने के द्वारा हम राष्ट्रों पर प्रभाव डाल सकते हैं। परमेश्वर, कलीसिया की ओर से मेरी प्रार्थना है, कि आज हमारे प्रत्युत्तर के जवाब में आप स्वयं को हमारे जीवनों और राष्ट्रों के प्रभु के रूप में प्रकट करें। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net